जानकीमंगल

जानकी मङ्गल

जानकीमंगल

جانکی منگل

ामतबक्स विव न

प्रकाश देहली मै छप

श्री गणेशायनमः

अथ श्री ज्ञानकी मंगल लिख्यते ॥ प्रथम सुमरि गु॰ रू देव गणेश मनाइये ॥ शारद को सिर नाय राम गुण गाइये ॥ प्रभु गुण सिन्ध समान कौन वर्णन॰ करे ॥ जैसी जाकी बुद्धि तैसी हिरदे धरे ॥ तब बोले ऋषि राय अवधपुर जाइये ॥ राम भये औतार य ज्ञ हित लाइये ॥ कर सरजू स्नान नृपति गृह आइ ये ॥ बहु विधि पूजा कर सिंहासन बैठाइये ॥१॥ कहत तयोधन अवध यति दोऊ कुंवर हमे दी जिये ॥ यज्ञ पूरण होय हमारो बिप्र को यश ली जिये ॥ सुन ऋषि रायके बचन नृपको कीनो घ नी ॥ कीजे कौन उपाय बात गाढ़ी बनी ॥ जब बो ले गुरु वशिष्ट नृपति सोच नहिं कीजिये ॥ राम पूरण बनाण यज्ञ हित दीजिये ॥ प्रेम को उपका

र कर नृप सुत दोऊ गोद में लीजिये ॥ महा मुनिन को भेटदे श्रीराम और लक्ष्मण दिये ॥ रत्नजटित पट बांधके फेटो और धनुष लिये ॥ कीनो बहुत प्रणाम पिता और मातसों ॥ नयन रहै जल पूर पिता और माता के ॥ इन को ऋषि नीके राखियो ये पुत्र अनाथ के ॥ आगे आगे बिश्वामित्र महा मुनि पाछे लक्ष्मण रामजी ॥ सकल नव घन श्याम सुंदर सकल पूर्ण कामजी ॥ राम कमल बदन बिशाल बांके दृग मोहना ॥ नामा मर्य सुदार सकल मद सोहना ॥ यह कवि हरि प्रकाश रामगुण गाये हैं ॥ गोर श्याम दोऊ भ्रात मुनि के मन भाये हैं ॥ उठे राक्षसी घोर महा प्रभु बान ए के सेहनी ॥ बिप्र को यज्ञ कियो पूर्ण कृपा कर कौसिल मुनि ॥ गिरो गर्ब गुमान ध्यान हरि

सोंधरी ॥ चौकेयरी जिय भाऊरा ॥ मसर सोइरी ।
ब्रह्म अस्त्र करि धार मारीचसो मारियो ॥ सौयोज
न तन मरो सुरति बिसारयो ॥ मारीच टार सुभाव
मारे ॥ मुनिनके मंगल भये ॥ सुर बिमान निपु
ष्प बररवें हर्ष जैजै कियो ॥ रचो स्वयंवर जनक पु
र आये ॥ चल कर देखिये ॥ आये बड़े २ भूपसबै
मिल्न पेरवये ॥ भली कही ऋषि राय जनक पुर
जायके शिवधनुष कठिन कठोर कोदर्शन दि
रवाइये ॥ चरगन की रज लागि अहिल्या तुरत
ही छबिसों भरि करि जोर अंगुली भई ठाडी
श्रीराम की स्तुति करी ॥ चरन परासि कुलना
रि तुर्त पद सुर पुर को गई ॥ रोसी कौतुक देख
करी नौका गही ॥ टेरतहैं रघुनाथ कि नौका
ल्याउरे ॥ बेग उतारो पार डरो जिन वावरे कर

जोर वो खेवट कहे प्रभु बाहन पें पार उतार
हो शिलाज्यों उड़ जाय नौका कुटुंबकिसवि
ध पालिहों ॥ जों नौका उड़ जाय धूर लगि पां
यकी मे तातें दूनी देह गढ़ाई नावकी ॥ कटे चर्ण
प्रक्षाल राम नौका बैठाइये ॥ करुणा सिंधु द
याल रघुवर दास अपनो कियो ॥ जोगी ध्वरन
के हेत हम नौका खेयके पार लगाये। रत्नभरे
जो पद रीझ केवट को दियो ॥ नौका उतरे पार
श्री राम जनक पुर को चले ॥ तोरेंगे शिव धनु
ष सगुन भेटे भले ॥ बन उपवन बहु बाग वि
विध भांति बैठक बनी ॥ कंचन हूंमें जटित म
हा रचना घनी ॥ ठौर २ बहु भूप उपमा जन
क पुर सोहना ॥ बसे जनक पुर लोग सुंदर मन
मोहना ॥ जनक सभाके मध्य भूप लख कर र

है ॥ छक के लाडू खाय मानो सब थक रहे ॥ पूछ
तहैं मिथिलेश कुंवर रिषि कौनके ॥ पूर्ण च जिन
के भाग दोऊ सुत जौनके ॥ महा शुभ दशरथ धारि
दोऊ गुण लायके ॥ रघु बंश महाराज श्री दशरथ
रायके ॥ नर नारी सब कहैं ये दोऊ किशोर हैं ॥
शिव कठिन कठोर धनुष को कैसे तोरिहैं ॥ ये
छबि श्यामल गौर हर्ष कर लीजिये ॥ काम को
ट स्वरूप दृगन भर पीजिये ॥ अष्ट सो मल्ल का
करके धनुष सभा में आनिये ॥ लागे हैं बड़े रू
प धनुष को तानिये ॥ कहत सिया सुन तात ध
ष भरण जिन करो ॥ नातर तजिहों प्राण केजेई बर
बरों ॥ करुणा सागर जियकी जानिये । पीतांबर क
ट बांध धुनुष ले तानिये । जै शकार तिहुं लोक के सु
रजाये । श्री राम चंद्र सुख निरख माल यहि राइये । सो

हनसी नाराम कंचन मंडप तरे। सिर सोनेका मुकट भुजा मु कगरे। राम भुजाके निकट सेया भुज झोलहै मरकत मरिा केरखंभ मनो कंचन्नभरे। राम लखनगे रे सिया भई सांवरी। सारद सो बुध जो बधू भई बाव री॥ रामभये घनश्याम सिया भई दामिनी। मुनिभये चंद चको र चकित भई भामिनी। पुष्प बरषत मेघ सुनी सब धिरहरें। होत जनकपुर व्याह रामभावरि रे रामसिया को ध्यान सदा शंकर करें। ब्रह्म रूप निहा र इंद्र पूजा करे। तुलसी सीता राम मोहन उर आनिये राम भजन बिन जन्म अमिथ्या जानिये। इति जान की मंगल संपूर्णम्॥८॥ अथ कृष्णजन्म लिख्यते जन्मे श्री कृस्न मुरारि भक्त हित कौने॥ मथुरा लि या औतार गोकल पलें पालने॥ तिथि अष्टमी बुधवार भादों बदी की कारी। रोहणी नक्षत्र आधीरा

न जन्म लियो शुभ घड़ी ॥ धनदेव की बसुदेव जहां
प्रभु औवतारे ॥ धन्य यशोदा बाबा नंद महरि परय
ग धरे ॥ धन २ सुरनर मुनि सब जय जय करें । दुंद
भी बजत आकाश सुमन बर्षा करें ॥ ब्रजबासी गोर
सभर २ लावहीं ॥ दधिकह बाबा नंद सों कीच मचा
वहीं ॥ बाजनताल मृदंग बीन अरु बांसरी । बांसरी
निरंतर गोपी ग्वाल चरन चित्त लावहीं । जसुमति
चीर पहराय चौरंगभई चालिनी । सुंदर बदन निहार
चकितभई भामिनी श्री बलभद्र जी के वीर असुरद
ल खंडन भक्त वत्सल महाराज जादु कुल मंडन शंकर
धरतहैं ध्यान सुगोप खिलावहीं सो मुख चूंबत माय
सुपलना झुलावहीं । आनंददास सनेह चर्णचित लावहीं ।
हरिगुण मंगल गाय गोबिंदगुण गावहीं । मंगल गाय
गोबिंदगुण गायहैं ॥ इति कृष्ण मंगल संपूर्णम्